उपसंहार

हमारे इतिहास में महिलाओं की अनदेखी कोई नई बात नहीं है। दलित आंदोलन भी इसका अपवाद नहीं है। दलित आंदोलनों में महिलाएं शुरुवाती समय से ही अपनी अहम भूमिका निभा रही है। दलित आंदोलनों की विचारधारा आंबेडकर की विचार धारा से प्रेरित रही है। दलित आंदोलनों का उद्देश्य संविधान को अपेक्षित और उसके मूल्यों (समता, बंधुत्व, न्याय और स्वतंत्रता) पर आधारित समाज व्यवस्था निर्माण करना है। आरंभिक समय में दलित आंदोलन नागरिक अधिकारों को लेकर चलाए जा रहे थे। भारतीय समाज में भी पुरुष प्रधान व्यवस्था विद्यमान है। जिसके कारण महियाएं पितृसत्ता से पीड़ित है। लेकिन दलित समाज में दलित स्त्रियों की सामाजिक स्थिती समान स्तर की ही थी, इस बात को ध्यान में रखते हुये हम यह समझ सकते है कि स्त्रियों ने स्वतंत्र रूप से अपने सामाजिक दासत्व से मुक्ति का आंदोलन खड़ा करने की आवश्यकता ही महसूस नहीं की। दलित स्त्री-पुरुष के सामाजिक, आर्थिक, शैक्षणिक और राजनीतिक प्रश्न एक ही होने की वजह से दलित समाज की उन्नति और विकास के आंदोलनों में समरस और सहभागी होती रही।

भारत में आंबेडकर के द्वारा चलाएं जा रहे क्रांतिकारी वैचारिक और सामाजिक आंदोलन के चलते दलित समाज में जागरूकता निर्माण हुई। दलित आंदोलन में महिलाओं की सहभागिता आंबेडकर के नेतृत्व में चलाये जा रहे आंदोलनों में स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। आंबेडकर की नीतियों से यह स्पष्ट होता है कि वे महिलाओं की सामाजिक और राजनीतिक भागीदारी को महत्वपूर्ण मानते थे। आंबेडकर की ही प्रेरणा और विचारधारा के आधार पर दलित महिलाओं ने अपने विचार और अपनी शक्ति का उपयोग करते हुये अपना योगदान सामाजिक आंदोलनों में दिया।

वर्तमान में भी दलित आंदोलनों में दलित और गैर दलित महिलाएं सक्रिय है। यह सारी महिलाएं आंबेडकर की विचारधारा से आज भी प्रेरित है और उनके द्वारा चलाये गए समता और न्याय के आंदोलनों के साथ-साथ स्त्री उत्थान के कार्य कर रही है। इन मे से कुछ महिलाएं महिला स्वायत संगठनों के द्वारा सक्रिय है। उनका मानना है कि महिलाओं के प्रश्न महिलाओं ने ही रखने चाहिए। उन प्रश्नों हल करने के लिए महिलाओं ने भी प्रयत्न करने चाहिए। अर्थात इस में वे पुरुषों का भी सहयोग चाहती है। यहा महिलाएं भी यह महसूस करती है कि महिलाओं के प्रश्न दलित आंदोलनों के आग्रक्रम के मुद्दों में शामिल नहीं है।

दलित आंदोलन भी पितृसत्ता से ग्रस्त है। १९७० के दशक के बाद दलित पैंथर के आंदोलन की शुरुआत हुई था। इस आंदोलन ने भी महिलाओं को संरक्षित करने लायक शोषिता के रूप में ही देखा।

नागपुर में १९७० के बाद से ही महिलाओं के स्वायत्त संगठनों का उदय होने लगा था। इसका कारण भारत सरकार द्वारा प्रकाशित 'Towards equality report' थी जिसमे महिलाओं की स्थिति के विषय बहुत ही महत्वपूर्ण और चिंताजनक आंकड़े सामने आए थे। इस रिपोर्ट की वजह से देश भर में असंतोष की लहर दौड़ गई। इसी की प्रतिक्रिया के रूप में महिलाओं के स्वायत्त संगठन नागपुर में निर्माण होने लगे। इसका एक और कारण मुख्यधारा की नारीवादी आंदोलनों में दलित महिलाओं के प्रश्न की अनदेखी भी है। इस समय दलित साहित्य भी अपने आप को स्थापित कर रहा था जहा महिलाएं भी अपनी अभिव्यक्तियों के जरीये समाज में दलित महिलाओं के शोषण और उनकी पीढ़ा को सामने ला रही थी। इसमें नागपुर की भी 'कुमुद पावड़े', 'सीमा साखरे', 'सुशीला टाकभोरे' आदि नाम लिए जा सकते है।

मथुरा रेप केस का निर्णय १९७४ में आया जिसमें सारे आरोपियों को छोड़ दिया गया था। जिसके कारण सारे देश में असंतोष का माहौल बन गया था। जिसके चलते नागपुर की ८० स्त्री संगठनों को एकत्रित कर एक बलात्कार विरोधी मंच बनाया गया। नागपुर में ही ८ मार्च १९८० के दिन देश का पहला बलात्कार विरोधी मोर्चा निकाला गया। नागपुर के स्त्री संगठनों ने संयुक्त रूप से महिलाओं के विरुद्ध लड़ने का निर्णय लिया था। इस बात से हमे यह समझने में मदद मिलती है कि नागपुर में महिलाएं और उनमें भी विशेषत: दलित महिलाएं अपने अधिकारों और अपने सामाजिक कर्तव्यों के प्रति अत्यंत जागरूक रही है। इनमें से कुछ महिलाएं अब सत्तर वर्ष से अधिक उम्र की होने पर भी सामाजिक रूप से आज भी सक्रिय है और सामाजिक प्रश्नों पर काम करने के लिए आज भी बाहर जाती है। इस समय के संगठन वर्तमान में भी सक्रिय है।

वर्तमान दलित आंदोलन में सक्रिय ऐसी महिलाए जो अपने स्वायत्त महिला संगठनों में नेतृत्व की भूमिका में है , सभी वैचारिक रूप से संपन्न है साथ ही उन्हें महिलाओं जे जुड़े प्रश्नों की समझ और काम का अनुभव होने के साथ-साथ अपने सामाजिक कर्तव्यों के प्रति भी वे जागरूक है। यह महिलाएं प्रखरता से अपने विचारों को समाज के समक्ष रखते हुये अपने कार्य कर रही है। यह महिलाएं भी पितृसत्ता का अनुभव करते हुये उसे दूर करने और महिलाओं की स्थिति को बेहतर बनाने में लगी हुयी है। इन

महिलाओं के प्रयासों से महिलाओं में जागरूकता का संचार हुआ है। इन महिलाओं ने सामान्य महिलाओं को उनकी अभिव्यक्ति के महत्व को समझाया है। उन्हें लिखने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्हें अपने सामाजिक कर्तव्यों के विषय में जागरूक बनाया। एक ध्यान खिचने वाली बात यह है कि आंदोलन में ज्यादा तर सम्मिलित होने वाली महिलाएं मध्यम वर्ग से होती है इसमें भी ज़्यादातर महिलाएं श्रमिक वर्ग की होती है। यह महिलाएं शिकायत भी करती है कि ज़्यादातर पढ़ी लिखी महिलाएं इन आंदोलनों में सम्मिलित नहीं होती। जमीनी स्तर पर काम करने वाली महिलाओं का दृष्टिकोण अलग है। यह महिलाएं भले ही अपनी बातों को उतने अच्छे से व्यक्त न कर पाती हो लेकिन यह महिलाएं इतना जरूर समझती और जानती है कि अपने समाज के उन्नति और विकास के लिए आंदोलनों में जाना चाहिए।

आंदोलनों में भाग लेने के लिए इन महिलाओं को पारिवारिक अड़चनों का भी सामना करना पढ़ता है। आंदोलनों मे सम्मिलित होने के लिए बहुत कम महिलाओं को अपने परिवार से समर्थन मिलता है। महिलाएं अपने घर के कामों का ध्यान रखते हुये आंदोलनों में सम्मिलित हो रही है।

नागपुर में महिलाएं विविध संगठनों के साथ मिलकर दलित समाज से जुड़े प्रश्नों पर काम कर रही है। महिलाओं का मुख्यधारा के दलित आंदोलनों में नेतृत्व कम ही दिखाई देता है। उनका नेतृत्व ज़्यादातर स्वायत्त संगठनों के रूप में सामने आया है। यह स्वायत्त संगठन महिलाओं के विरुद्ध हिंसा, धम्म प्रचार, महिला सशक्तिकरण, जेंडर संवेदनशीलता, श्रमिक महिलाओं के प्रश्न (मोलकरिण) आदि विषयों पर कार्यरत है।

नागपुर की महिलाएं और महिला संगठन विविध विषयों में सक्रिय है। धार्मिक, सामाजिक और राजनीतिक क्षेत्र में महिलाएं अपना योगदान दे रही है। वे प्रखरता के साथ अपने आप को अभिव्यक्त कर रही है। वर्तमान में यह आवश्यक है की पढ़ी लिखी महिलाएं झुग्गी झोपड़ियों और गाँव में रहने वाली दलित महिलाओं की समस्याओं और प्रश्नों को समझकर उनकी प्रगति और उनपर हो रहे अत्याचारों के संबंध में कुछ ठोस रूप से करने की जरूरत है। आज शहर की सुशिक्षित और गाँव, झुग्गी झोपड़ी की महिलाओं के बीच दूरी बन गयी है। इस दूरी को खत्म कर जब शहर की सुशिक्षित महिलाएं गाँव की अनपढ़ महिलाओं के हाथों में हाथ डाल कर कार्य करेंगी तभी दलित महिलाओं को समाज में प्रतिष्ठा और न्याय मिल सकेगा।